

Padma Shri



DR. HIMMATRAO SALUBA BAWASKAR

Dr. Himmatrao Saluba Bawaskar is a physician-scientist and founder of the Bawaskar Hospital and Research Centre in Mahad, Maharashtra. He is a globally recognized figure for pioneering research on the management of scorpion sting and snake bite envenomation. The world's leading scientific journals have greatly acknowledged his contributions in saving millions of lives. His landmark research not only brings glory to India on the global scientific platform but also serves as an inspiration for generations of physician-scientists.

2. Born on 3rd March, 1951, Dr. Bawaskar received his MBBS degree from Government Medical College, Nagpur in 1975 followed by a M.D. (Medicine) degree from B.J. Medical College, Pune in 1981. To continue the research in scorpion sting, he himself requested transfer to Rural Hospital Poladpur in Raigad district. In 1981 his wife doctor Pramodini joined his venture and started studying the clinical signs and symptoms of scorpion envenoming. In 1983 the doctor couple tried sodium nitroprusside and then prazosin, an alpha blocker to reverse the refractory pulmonary edema due to scorpion sting. This resulted in 40% reduction in case fatality rate which was published in The Lancet in 1983. He conducted research with no external funding which also includes a randomised control trial for use of prazosin and anti-scorpion venom which was published in British Medical Journal. He was invited to write a review article on scorpion envenomation in New England Journal of Medicine.

3. Dr. Bawaskar comes from a very humble background. His practices of managing snakebite victims in resource-poor settings are highly acclaimed. He has made it his life mission to guide young doctors and scientists to train them in good clinical practices and scientifically and ethically accurate research. He has trained several doctors in periphery all over India which has potentially saved millions of lives. He has travelled through many countries and across India delivering lectures, training, workshops, and seminars. He has published more than 108 original research articles and is a highly cited author in The Lancet, New England Journal of Medicine and the British Medical Journal. He also serves as a peer reviewer for top scientific journals. He has contributed extensively in drafting the National Policy for Snakebite Management and Policy to curb Corruption in Medical Practices in India. His autobiography 'Tarristerach Kart' is one of the most popular and sought-after books in Marathi literature.

4. Dr. Bawaskar's crusade for uplifting human life from misery and suffering has earned him numerous states, national and international awards. Ciba Foundation, London, and Government of Morocco have felicitated him for his work. He received the Excellence Award from Lions Club International in 2015. Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Maharashtra Association of Physicians, Indian Medical Association, Clinical Research Society, and Ekam Foundation have conferred him with Lifetime Achievement Awards, Dr. Mehta and Patel Award; Parker Medical Foundation Award; Marathwada Bhushan Award; and Buldana Jilha Gaurav Puraskar recognize his exemplary service. His autobiography has received accolades from the Marathi Vidnyan Parishad and Utkrushi Sahitya Award by Aapte Vachnalay. He served as a member of Research Advisory Committee of Model Rural Health Research Unit Dahanu, Maharashtra and provided training to Medical Officers in Maharashtra. His contributions, without any government or external funding, to saving millions of lives speak volumes about his highest level of dedication, wholeheartedness, and diligence.

पद्म श्री



डॉ. हिम्मतराव सालुबा बावस्कर

डॉ. हिम्मतराव सालुबा बावस्कर एक चिकित्सक—वैज्ञानिक और महाड, महाराष्ट्र में बावस्कर अस्पताल और अनुसंधान केंद्र के संस्थापक हैं। वे बिच्छू के डंक और सांप के काटने के विष के प्रबंधन पर अग्रणी शोध के लिए विश्व स्तर पर विख्यात हैं। दुनिया की प्रमुख वैज्ञानिक पत्रिकाओं ने लाखों लोगों की जान बचाने में उनके योगदान को बहुत सराहा है। उनके ऐतिहासिक शोध ने न सिर्फ वैश्विक वैज्ञानिक मंच पर भारत को गौरवान्वित किया है बल्कि चिकित्सक—वैज्ञानिकों की पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा—स्रोत भी है।

2. 3 मार्च, 1951 को जन्मे, डॉ. बावस्कर ने 1975 में गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज, नागपुर से एमबीबीएस की डिग्री प्राप्त की और उसके बाद 1981 में बीजे मेडिकल कॉलेज, पुणे से एमडी (मेडिसिन) की डिग्री प्राप्त की। बिच्छू के डंक पर शोध जारी रखने के लिए, उन्होंने खुद रायगढ़ जिले के ग्रामीण अस्पताल पोलादपुर में स्थानांतरण का अनुरोध किया। 1981 में उनकी पत्नी डॉक्टर प्रमोदिनी भी उनके उद्यम में शामिल हो गईं और बिच्छू के जहर के क्लीनिकल संकेतों और लक्षणों का अध्ययन शुरू किया। 1983 में डॉक्टर दंपति ने बिच्छू के डंक के कारण रिफ्रैक्टरी पल्मनरी एडिमा को ठीक करने के लिए सोडियम नाइट्रोप्रुसाइड और फिर एक अल्फा अवरोधक प्राजोसिन को आजमाया। इसके कारण मृत्यु दर में 40% की कमी आई जो 1983 में द लैंसेट में प्रकाशित हुई। उन्होंने बिना किसी बाहरी फंडिंग के शोध किया, जिसमें प्राजोसिन और बिच्छू—विरोधी जहर के उपयोग के लिए एक रैंडमाइज्ड कंट्रोल ट्रायल भी शामिल है, जो ब्रिटिश मेडिकल जर्नल में प्रकाशित हुआ था। न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन में उन्हें बिच्छू के जहर पर एक समीक्षा लेख लिखने के लिए आमंत्रित किया गया था।

3. डॉ. बावस्कर बहुत साधारण पृष्ठभूमि से आते हैं। संसाधनों से वंचित गरीबी वाले इलाकों में सर्पदंश पीड़ितों का इलाज करने की उनकी प्रैक्टिस को बहुत सराहा गया है। उन्होंने युवा डॉक्टरों और वैज्ञानिकों को अच्छी क्लीनिकल प्रैक्टिस और वैज्ञानिक व नैतिक रूप से उपयुक्त शोध में प्रशिक्षित करने के लिए मार्गदर्शन करना अपने जीवन का मिशन बना लिया है। उन्होंने पूरे भारत में कई डॉक्टरों को प्रशिक्षित किया है, जिसकी वजह से लाखों लोगों की जान बच पाई है। उन्होंने व्याख्यान, प्रशिक्षण देते हुए, कार्यशालाओं और सेमिनारों के लिए कई देशों और भारत भर में यात्रा की है। उन्होंने 108 से अधिक मौलिक शोध लेख प्रकाशित किए हैं और द लैंसेट, न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन और ब्रिटिश मेडिकल जर्नल में काफी उद्धृत किए जाने वाले लेखक हैं। वह शीर्ष वैज्ञानिक पत्रिकाओं के लिए एक समीक्षक का भी काम करते हैं। उन्होंने भारत में चिकित्सा पद्धतियों में भ्रष्टाचार को रोकने के लिए सर्पदंश प्रबंधन और नीति के लिए एक राष्ट्रीय नीति का मसौदा तैयार करने में व्यापक योगदान दिया है। उनकी आत्मकथा 'टैरिस्टरच कार्त' मराठी साहित्य की सबसे लोकप्रिय और मशहूर किताबों में से एक है।

4. मनुष्य जीवन को दुख और पीड़ा से ऊपर उठाने के लिए डॉ. बावस्कर ने जो बीड़ा उठाया है, उसने उन्हें कई राज्यों के, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार दिलाए हैं। सीबा फाउंडेशन, लंदन और मोरक्को सरकार ने उनके काम के लिए उन्हें सम्मानित किया है। 2015 में उन्हें लायंस क्लब इंटरनेशनल से उत्कृष्टता पुरस्कार मिला। डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र एसोसिएशन ऑफ फिजिशियन, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, क्लिनिकल रिसर्च सोसाइटी और एकम फाउंडेशन ने उन्हें लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया है। डॉ. मेहता एंड पटेल अवार्ड; पार्कर मेडिकल फाउंडेशन अवार्ड; मराठवाड़ा भूषण अवार्ड और बुलडाना जिला गौरव पुरस्कार उनकी असाधारण सेवा को मान्यता देते हैं। उनकी आत्मकथा को मराठी विज्ञान परिषद से सराहना मिली है और आपटे वाचनालय द्वारा उत्कृष्ट साहित्य पुरस्कार दिया गया है। उन्होंने मॉडल ग्रामीण स्वास्थ्य अनुसंधान इकाई दहानू, महाराष्ट्र की अनुसंधान सलाहकार समिति के सदस्य के रूप में कार्य किया और महाराष्ट्र में चिकित्सा अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया। बिना किसी सरकारी या बाहरी फंडिंग के, लाखों लोगों की जान बचाने के लिए उनका योगदान उनकी लगन, सहृदयता और कर्मठता को दर्शाता है।